Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

गुप्तकाल का भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव

Dr. Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश – *गुप्त काल (319-550 ई.) को भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल कहा जाता है। इतिहासकारों ने इसे शास्त्रीय युग भी कहा है। हालाँकि हर युग या अवधि की संस्कृति की अपनी विशेषता होती है, लेकिन जहाँ तक गुप्त काल की सभ्यता और संस्कृति का सवाल है, इस युग में, भारतीय समाज ने न केवल जीवन के हर क्षेत्र में असाधारण प्रगति की, बल्कि इसका सर्वांगीण विकास भी किया। इस अवधि की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और कलात्मक प्रगति के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गुप्त काल की महिमा और गरिमा इतनी व्यापक थी कि इसे प्राचीन भारत के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। गुप्त काल की चहुंमुखी प्रगति और चकाचौंध की चमक सोने जैसी थी। इस युग में, साहित्य और कला का विकास एक अभूतपूर्व विकास था। इस शोध पत्र में, हम आर्थिक शासन, आर्थिक स्थिति, धर्म, समाज, शिक्षा और साहित्य, कला और साहित्य विकास के मुख्य पहलुओं से अवगत होने का प्रयास करेंगे।*

मुख्य बिंदु – *गुप्तकाल में शासन, आर्थिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, शिक्षा और साहित्य, कला और संस्कृति, गुप्त शासन का पतन।*

----------X----------

प्रस्तावना

कुषाणों के बाद गुप्त साम्राज्य सबसे महत्वपूर्ण साम्राज्य था। गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। गुप्त साम्राज्य के पहले प्रसिद्ध सम्राट घटोत्कच के पुत्र चंद्रगुप्त थे। उन्होंने लिच्छवि के प्रमुख की बेटी कुमार देवी से शादी की। यह शादी चंद्रगुप्त के जीवन में बदलाव लाने वाली थी। उन्होंने इसे पाटलिपुत्र दहेज में लिच्छिवियों से प्राप्त किया। पाटलिपुत्र से, उसने अपने साम्राज्य की नींव रखी और लिच्छिवियों की मदद से कई पड़ोसी राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। उसने मगध (बिहार), प्रयाग और साकेत (पूर्वी उत्तर प्रदेश) पर शासन किया। उसका साम्राज्य गंगा नदी से इलाहाबाद तक फैला हुआ था। चंद्रगुप्त को महाराजाधिराज की उपाधि से विभूषित किया गया और लगभग पंद्रह वर्षों तक शासन किया। चंद्रगुप्त को 330 ईस्वी में समुद्रगुप्त ने उत्तराधिकारी बनाया, जिसने लगभग 50 वर्षों तक शासन किया। वह एक बहुत ही प्रतिभाशाली योद्धा था और कहा जाता है कि उसने पूरे दक्षिण में एक सैन्य अभियान का नेतृत्व किया और विंध्य क्षेत्र के बनवासी जनजातियों को हराया। समुद्रगुप्त को चंद्रगुप्त ने सफल किया, जिसे विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है। उसने मालवा, गुजरात और काठियावाड़ के बड़े इलाकों को जीत लिया। इससे उन्हें असाधारण धन की प्राप्ति हुई और इसने गुप्त साम्राज्य की समृद्धि में वृद्धि की। इस अवधि के दौरान, गुप्ता राजाओं ने पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार शुरू किया। यह संभव है कि कालिदास, सबसे महान संस्कृत कवि और नाटककार और कई अन्य वैज्ञानिकों और विद्वानों के शासनकाल के दौरान फले-फूले और आगे बढ़े।

उद्देश्य

1. गुप्तकाल की सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।
2. गुप्तकाल में शासन व्यवस्था की विवेचना की गई है।
3. गुप्तकालीन शिक्षा, कला एवं संस्कृति के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

परिकल्पना

1. गुप्तकालीन शासन व्यवस्था सुदृढ़ एवं उन्नतिशील रही है।

www.ignited.in

2. गुप्तकालीन कला एवं संस्कृति के समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक सूचनाओं का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आँकड़ो का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न संचार साधनों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

1. गुप्त शासन

गुप्त शासन की प्रणाली इतनी सुव्यवस्थित और उत्कृष्ट थी कि इसके संबंध में, चीनी यात्री (उसकी आँखों में देखा) ने लिखा है कि: 'गुप्त काल में लोग बहुत खुश हैं। व्यवहार और पंच पंचायतों के बारे में कुछ नहीं लिखा है। सभी लोग राजा को भूमि मानते हैं और उसे कर के रूप में उपज का एक निश्चित हिस्सा देते हैं। लोग अपनी इच्छानुसार आकर रह सकते हैं। राजा न तो किसी को मृत्यु देता है और न ही किसी तरह की शारीरिक यातना देता है। अपराधी को शर्त के अनुसार सबसे अच्छा साहस या उदारवादी साहस दिया जाता है। बार-बार डाकुओं का क्षय होता है। राजा के प्रतिहार और साथी वेतनभोगी हैं। पूरे देश में, कोई भी निवासी जानवर हिंसा नहीं करता है और न ही शराब पीता है, न ही कोई लहसुन और प्याज खाता है। केवल चांडाल लोग ही मछली मारते हैं, मारते हैं और मांस बेचते हैं। "इस विवरण से यह पता चलता है कि गुप्त शासन कितना मजबूत था। भारत में हर जगह रामराज्य जैसा माहौल था। सम्राट प्रजा वत्सल और लोकप्रिय थे। देश में धन, समृद्धि, शांति, शालीनता, समानता का माहौल था। शासक प्रजिथ को सर्वोपरि मानते थे। वह विषयों के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए अधिक समय देते थे। तभी जनता को अपने जीवन को स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार था। उस समय, कई सामाजिक व्यवस्थाएं थीं, कई धार्मिक परंपराएं थीं। और भारत में कई भाषाएं। गुप्त सम्राट भारत की इन विविध विशेषताओं से परिचित थे। राष्ट्रीय आर्य संस्कृति और सांस्कृतिक एकता की स्थापना के लिए, उन्होंने विदेशी तत्वों को अलग करने की कोशिश की। 'भारत भारतीयों के लिए है," उनके संपादन को कहा जा सकता है। राष्ट्रीय एकता का आधार। धर्म, भाषा, समुद्रगुप्त और उसके बाद के सभी शासकों की एकता के लिए, कम से कम रन के साथ दिग्विजय अभियान की योजना को लागू करने का प्रयास किया। गुप्त काल के दौरान रेज किया गया, जिसके लिए उन्होंने एकछत्र साम्राज्य की स्थापना की। सम्राट समुद्रगुप्त ने दिग्विजय की महान परंपरा को स्वीकार किया, आर्यावर्त के सभी उत्तरी राज्यों को हराकर उन्हें जीत लिया और उन्हें अपने साम्राज्य साम्राज्य का हिस्सा बना लिया। उन्होंने दक्षिणापथ को भी अपने अधीन कर लिया। समुद्रगुप्त के बाद, उनके पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय ने मगध की गद्दी संभाली और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। वास्तव में, वह उस समय भारत के सबसे शक्तिशाली सम्राट थे, जिन्होंने स्वधर्म, स्वदेश और स्वभाषा की आदर्श भावना को स्थापित किया। अपनी छतरी की मदद से, उन्होंने संरक्षित इलाके से विदेशी आक्रमणकारियों जैसे हूणों को मारने का बेजोड़ काम किया। इस दिग्विजता ने विभिन्न रूपों में भारत की भूमि पर अपनी सार्वभौमिक शक्ति का परिचय दिया।

गुप्त काल के महान सम्राटों की महान शक्ति और वीरता उत्तराधिकारियों का एक परिणाम थी जिन्होंने अखंड राज्य के लिए अपने विस्तारित राज्यों को छोड़ दिया। इस देश की सामाजिक शक्ति इतनी मजबूत और मजबूत थी कि किसी भी विदेशी ने भारत की भूमि पर आंखें मूंदने की हिम्मत नहीं की। इन सम्राटों ने जनता की भलाई के लिए अविस्मरणीय काम किया।

2. आर्थिक स्थिति

गुप्त शासकों ने अपने लोगों के दर्द और पीड़ा को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया। उन्होंने जनता से बहुत प्यार दिया। इसीलि, कृषि, उद्योग, व्यापार, व्यवसाय के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने का अवसर मिलाय क्योंकि विदेशी आक्रमणों की संख्या कम थी। विदेशी व्यापार के कारण देश के धन में भारी वृद्धि हुई। चीनी यात्री फाहयान ने अपने यात्रा वृत्तांत में इसका विवरण लिखा है। इस प्रकार, अच्छी तरह से विकसित व्यापार के कारण, भारत पूरे विश्व में एक प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

3. धार्मिक स्थिति

गुप्त काल में हिंदू, बौद्ध आदि धर्म प्रचलित थे। यहां के शासकों ने सभी के लिए सहिष्णुता और संरक्षण की नीति का पालन किया। सभी धर्मों के प्रति समान रूप से व्यवहार किया।

www.ignited.in

4. सामाजिक स्थिति

गुप्त काल की सामाजिक स्थिति की प्रमुख विशेषता यह थी कि गुप्त शासक ब्राह्मणों के साथ विशेष श्रद्धा रखते थे। समाज जातियों और उप-जातियों में विभाजित था। बाहर के विदेशी हिंदू जाति में आ गए। राजपूतों के 36 कुलों को एक कबीले में समाहित बताया गया था। ग्राम दान की प्रक्रिया के कारण आदिवासी लोग भी हिंदू समाज में आ गए। इस अवधि के दौरान शूद्रों को रामायण, महाभारत और पुराण सुनने का अधिकार मिला।

उसे घरेलू अनुष्ठानों का भी अधिकार था। वे कृषक के रूप में पहचाने जाते थे। गाँवों के बाहर चांडाल अधिक बसे हुए थे। मांस का कारोबार करते थे। उच्च वर्ग उनसे दूर रहा करता था। यह माना जाता था कि शूद्रों के स्पर्श से सड़कें प्रदूषित होती थीं। इस अवधि के दौरान, महिलाओं को रामायण, महाभारत और पुराण सुनने का अधिकार था। उसे बहुविवाह और पुनर्विवाह का अधिकार था। दुल्हन की शादी उसकी सास से हुई थी। बेटी को अचल संपत्ति में अधिकार नहीं मिला। इस अवधि में, भागवत संप्रदाय ने महायान बौद्ध धर्म को प्रभावित किया।

5. शिक्षा और साहित्य

गुप्त काल प्रकृति में लौकिक था। महाकवि भास के 13 नाटक इसी काल के हैं। आज तक लिखे गए मृत्तिकम, जो एक गरीब ब्राह्मण के साथ वेश्या के प्रेम का वर्णन करता है, प्राचीन नाटकों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस काल की अन्य उत्कृष्ट कृतियों में कालीदास की अभिज्ञान शाकुन्तलम्, दूसरी भगवद् गीता है। इसके अलावा याज्ञवल्क्य, स्मृति और कात्यायन स्मृति। नारद स्मृति और रामायण, महाभारत को रूपांतरित किया गया। अमरकोश अमरसिंह द्वारा लिखित एक संस्कृत शब्दकोष है। उसी युग में, एक निवासी विद्वान चंद ने अपनी व्याकरण पुस्तक लिखी थी। गुप्त काल में विज्ञान और ज्योतिष का महत्वपूर्ण योगदान है। इस युग में दशमलव प्रणाली विकसित हुई। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्यभट्ट ने इस युग में पृथ्वी की परिधि की खोज की। नक्षत्र, खगोल विज्ञान के साथ, आर्यभट्ट ने कहा कि पृथ्वी गोल है। यह अपनी धुरी पर घूमता है। राहु कुछ भी नहीं है। यह चंद्र ग्रहण और पृथ्वी की छाया का उपोत्पाद है। वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त इस युग के महान गणितज्ञ थे। आयुर्वेद और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नागार्जुन नामक एक रसायनज्ञ का नाम आता है, जिन्होंने रास चिकित्सा नामक एक नई विधि का आविष्कार किया था। सिद्ध करें कि लोहा, तांबा, सोना, चांदी में भी रोग निवारण शक्ति है। उन्होंने पारद के सिद्धांत का भी आविष्कार किया।

7. कला और संस्कृति

इस युग की कलात्मक सांस्कृतिक विरासत के बीच वास्तुकला, मूर्तिकला, पेंटिंग प्रसिद्ध हैं। स्तूप, चैत्य, विहार, आसन आदि के कारण गुप्त काल को स्वर्ण युग कहा जाता है, समुद्रगुप्त को सिक्के पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। पत्थर की ऊंची संरचना, स्तूप, जिसे भगवान बुद्ध की अनगिनत मूर्तियों का निर्माण किया गया था, को काटकर पत्थर बनाए गए थे। गुप्त काल की दो मीटर ऊँची कांस्य की एक मूर्ति भागलपुर में मिली है और 25 फीट ऊँची तांबे की मूर्ति का उल्लेख है। सारनाथ मथुरा में उत्कृष्ट मूर्तियां हैं। गुप्त बौद्ध कला का सबसे अच्छा नमूना अजंता की पेंटिंग है, जिसमें रंगों की चमक आज भी बनी हुई है। बाघ और अजंता की गुफाओं के साथ-साथ शानदार ऊँची इमारतों का कौशल इस अवधि की विशेषता है। गुप्ता भवन निर्माण के अन्य उदाहरण। भूमरा (नागौर) नचनकुथर, अजयगढ़ का शिव पार्वती मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर, बुधगया का बौद्ध मंदिर प्रसिद्ध हैं। इस युग की मूर्तिकला की विशेषता यह है कि यह भौतिक अभिव्यक्ति को प्राथमिकता देने के बजाय आध्यात्मिक भावनाओं को प्राथमिकता देती है। इस युग में, हिंदू धर्म के देवताओं के बीच, भगवान शिव, विष्णु, सूर्य, दुर्गा, गणेश और स्वामी कार्तिकेय की कई अद्भुत कलात्मक, शानदार मूर्तियां हैं। शिव के अर्ध-नारीश्वर रूप और सारनाथ की बुद्ध प्रतिमा का निर्माण प्राकृतिक संतुष्टि और गंभीर आध्यात्मिक ध्यान देता है। उदयगिरि की सुविशाल वराह प्रतिमा भी एक सुंदर नमूना है। ये सभी मूर्तियाँ सौंदर्य, अलंकार, आजीविका, आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं। महरौली का लौह स्तंभ, जिसे आज तक भी नहीं छुआ जा सका है।

चित्रकला

गुप्ता पेंटिंग के नमूने हमें सीधे अजंता और बाघ तेंदुओं के भित्ति चित्रों में मिलते हैं। लौकिक और अलौकिक जीवन की जड़ों और सचेतन स्थितियों का एक सुंदर नमूना इस पेंटिंग में मिलता है। प्रकृति के साथ स्नेह करने वाले चित्रकारों ने फूलों, पेड़ों, भटकते जंगली जानवरों, बंदरों, हाथियों, हिरणों, शेरों और सुंदर प्रकृति के सुंदर चित्रों के चित्र लिए हैं।

संगीतकला

गुप्त संगीत में गायन, वादन, नृत्य तीनों का चलन था। समुद्रगुप्त एक अच्छा वीणावादक था। महिला और पुरुष संगीत शिक्षा में विशेष रुचि रखते थे। दरबारी संगीत और ललित कला में पारंगत थे।

पैसे बनाने की कला- इस युग के कारीगरों ने यूनानियों द्वारा सीखे गए पैसे बनाने की कला को चरमोत्कर्ष दिया। इस युग में कलात्मक स्वर्ण मुद्राएँ प्रचलन में आईं, जिसमें उनके आकार और प्रकार से लेकर स्पष्ट रूप से सामग्री और काव्य लेखन पर प्रकाश डाला गया।

गुप्त शासन का पतन की:

ईसा की 5 वीं और 6 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्तर भारत में गुप्त शासन के पतन ने बहुत छोटे स्वतंत्र राज्यों का उदय किया और विदेशी हूणों के आक्रमणों को भी आकर्षित किया। हूणों का नेता तोरामोरा था। वह गुप्त साम्राज्य के बड़े हिस्से को जब्त करने में सफल रहा। उसका पुत्र मिहिरकुल बहुत क्रूर और बर्बर और सबसे बुरा तानाशाह था। मालवा के दो स्थानीय शक्तिशाली राजकुमारों यशोधर्मन और मगध के बालादित्य ने उनकी शक्ति को कुचल दिया और भारत में उनका साम्राज्य समाप्त कर दिया।

निष्कर्ष:

यह सच है कि गुप्त काल ने भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। खासतौर पर साहित्य और कला के क्षेत्र में। इस युग की विशेषता यह भी रही है कि भारतीयों ने न केवल चीन, कंबोडिया, इंडोनेशिया, जापान, कोरिया और मध्य एशिया के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए, बल्कि सभ्यता और संस्कृति का भी आदान-प्रदान किया। यह सब सम्राट समुद्रगुप्त की प्रतिष्ठा का प्रमाण है। इतिहासकारों ने इस युग की रोम के एंटोनियों युग के साथ समानता के रूप में प्रशंसा की है, लेकिन यह कहना उचित होगा कि एंटोनी युग साहित्य, कला और दर्शन के क्षेत्र में आगे बढ़ा है, लेकिन गुप्त काल के सम्राटों की तरह। न तो प्रजावत्सल और न ही धार्मिक सहिष्णु था क्योंकि एंटोनी राजाओं ने प्लेबियस जाति को दास के रूप में माना था। इस तरह, गुप्त काल को दुनिया भर में अपनी अनूठी सर्वांगीण प्रगति के कारण जाना जाता है, जिसे भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ सूची:

1. भूदयाल अग्निहोत्री: पतंजलि कालीन भारत, पटना, 1963
2. वासुदेवदर्शन अग्रवाल: कला और संस्कृति, इलाहाबाद
3. सरला अग्रवाल: वास्तु दर्शन, कामेश्वर प्रकाशनए बीकानेरए 1996
4. प्रो. पीके आचार्य: ए डिक्शनरी ऑफ हिंदू आर्किटेक्चर, वाराणसी
5. ईटी रिचमंड: मुस्लिम आर्किटेक्चर, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता, 1926
6. वासुदेव उपाध्याय: प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहास और मंदिर, पटना, 1972
7. भगवतीशरण उपाध्याय: भारतीय कला और संस्कृति की भूमिका, नई दिल्ली, 1991
8. भगवतीशरण उपाध्याय: गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास, लखनऊ, 1969
9. क्यू एचीसन: संधियों का एक संग्रह, सगाई और रविवार, खंड-2, 1932
10. जयशंकर मिश्र: प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2002
11. दामोदर धर्मानंद कोसांबी: प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002
12. परमेश्वरी लाल गुप्ता: भारतीय वास्तुकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1999
13. रमानाथ मिश्र: भारतीय मूर्तिकला, 1978
14. रमानाथ मिश्र: भारतीय मूर्तिकला का इतिहासए ग्रन्थ शिल्पी (भारत) प्रा. दिल्ली, 2002
15. राधा कुमुद मुखर्जी: हिंदू सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
16. रोमिला थापर: भारत का इतिहासए राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
17. विमल चंद्र पांडे: प्राचीन भारत का इतिहास (भाग-2), अभय प्रेस, मेरठ, 1987-88

www.ignited.in

18. विमल चंद्र पांडे: प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास (भाग 2), सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 2001

Corresponding Author

Dr. Meena Ambesh*

Lecturer, Department of History, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan